View metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

अखिल भारतीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी

30 अक्तूबर 2015

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला
तृक्काक्करा डाक घर, कोच्चि - 682 021

प्रपत्र प्रस्तुति : सत्र – II

सत्र : II – 01 स्वच्छ भारत

श्रीमती सुनंदा दहितुले, निजि सचिव
आयुध अनुसंधान एवं विकास संस्थापन, पुणे

सत्र : II – 02 स्वच्छ भारत

श्री जी. एस. हिरेमठ, तकनीकी अधिकारी 'सी'
अनुसंधान तथा विकास स्थापन (इंजानिअर्स), पुणे

सत्र : II – 03 स्वच्छ भारत

श्रीमती राजेश्वरी आर, तकनीकी अधिकारी 'ए'
नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

सत्र : II – 04 स्वच्छ भारत – भविष्य के लिए परिदृष्य

सर्व श्री श्याम एस सलिम, ई.के. उमा और वन्दना वी
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची

सत्र : II – 05 कैसे बनाएँ कबाड को कंचन

श्रीमती सुमन पवार, तकनीकी अधिकारी 'सी'
उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे

सत्र : II – 06 स्वच्छ भारत

श्री के अरुण, वैज्ञानिक 'एफ'
नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

सत्र : II – 07 स्वच्छ भारत

डॉ सन्तोष अलक्स, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चिन

सत्र : II – 08 स्वच्छ भारत

श्री अभिषेक कुमार, आशुलिपिक III
नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

स्वच्छ भारत - भविष्य के लिए परिदृष्य

श्याम एस. सलिम*, ई. के. उमा और वन्दना वी. केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, पी. बी. सं.1603, कोच्ची - 682 018, केरल, भारत

* वरिष्ठ वैज्ञानिक ई मेलः shyam.icar@gmail.com

---------- अ.भा.रा.वै.सं. 2015

सत्र : II - 04

सारांश

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है. इसके साथ ही यह अपने आप को बदलते समय के साथ ढ़लती भी आयी है. विकास एवं वृद्धि को एक साथ संभालना मुश्किल है. जैसा कि एक कारखाना के विकास से आस पास में गंदगी की समस्या उत्पन्न करते है वैसे विकास एवं वृद्धि को हाथ से हाथ संभालना मुश्किल है. देश के विकास एवं वृद्धि के लिए योजनाओं का आविष्कार तो किया जा रहा है बल्कि, समय निष्ठता के आधार पर उन योजनाओं की सफलता नहीं के बराबर है.

भारत के विकास में हर एक सरकार के आगे स्वच्छता एक मुख्य कार्यक्रम रहा. "स्वच्छता स्वतंत्रता से ज़्यादा ज़रूरी है" मानने वालों में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेहरू जैसे महान नेता थे. स्वच्छता के साथ साथ स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण की प्रधानता दिया जाता है. स्कूलों और दफ्तरों में पेड़ पौधे लगाकर देश की जनता ने अभियान को और आगे बढाया.

पर्यावरण संरक्षण के साथ साथ स्वास्थ्य की प्रधानता है और एक स्वस्थ जनता को रूपायित करेगा. स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है. अतः हर व्यक्ति को जीवन में स्वच्छता अपनानी चाहिए और अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए.

इस लेख में अभियान की शक्ति, कमजोरी, मौका, एवं आशंका को विश्लेषित करने की कोशिश की गयी है. जो भी हो, कोई भी सरकार चाहे जितनी भी योजनायं शुरू करें, उसको सफल बनाने के लिए जनता की सहभागिता बहुत ज़रूरी है. जैसा आप जानते हैं "स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है". यह कदम हर एक व्यक्ति को उठाना चाहिए ताकि पूरे देश की आर्थिक, सांस्कृतिक, एवं सामाजिक दृष्टि से विकास हो सके. दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ विविधता में एकता की विशेषता रखनेवाले भारत देश को स्वच्छ भारत की ओर ले जाना हम सब का कर्तव्य है. हम इसके लिए ज़रूर कोशिश करेंगे.

---------- एन पी ओ एल

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है. इसके साथ ही यह अपने आप को बदलते समय के साथ ढ़लती भी आयी है. आज़ादी पाने के बाद पिछले 67 वर्षों से भारत में बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति हुई है. हरित क्रांति, दुग्ध क्रांति से भारत कृषि में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब दुनिया के सबसे औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में भारत की गिनती की जाती है. पिछले दशक के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा प्राप्त उच्च विकास दर देश में सेवा क्षेत्र के विकास को दर्शाती है.

विकास एवं वृद्धि को एक साथ संभालना मुश्किल है. जैसा कि एक कारखाना के विकास से आस पास में गंदगी की समस्या उत्पन्न करते है वैसे विकास एवं वृद्धि को हाथ से हाथ संभालना मुश्किल है. देश के विकास एवं वृद्धि के लिए योजनाओं का आविष्कार तो किया जा रहा है बल्कि, समय निष्ठता के आधार पर उन योजनाओं की सफलता नहीं के बराबर है.

भारत की विशाल आबादी एवं इसकी भौगोलिक, भाषायी, सांस्कृतिक विविधताओं को ध्यान में रखें तो पूरे देश को साफ सुथरा करने का लक्ष्य अब तक की सरकारों द्वारा घोषित कार्यक्रमों में सबसे कठिन लक्ष्य होगा. एक देश जो संस्कारवश स्वभाव से ही अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक दिनचर्या में परिवेश की शुद्धता और पवित्रता के प्रति सबसे सतर्क था वह समय के थपेडों और नई जीवन शैली की विवशताओं में इससे परे काफी दूर तक निकल गया है. उसको फिर से पुराने संस्कार तक लाना आसान काम नहीं है.

भारत के विकास में हर एक सरकार के आगे स्वच्छता एक मुख्य कार्यक्रम रहा. “स्वच्छता स्वतंत्रता से ज़्यादा ज़रूरी है” मानने वालों में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेहरू जैसे महान नेता थे. स्वच्छता अभियान हर सरकार के लिए चुनौती रहा. वर्ष 1986 में राजीव गांधी और 1999 में अटल बिहारी वाजपेय ने “ केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम - Central Rural Sanitation Programme” की शुरुआत की जिसको “निर्मल अभियान“ के नाम से यूं पी ए सरकार ने आगे बढ़ाया. अब हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी महात्मा गांधी के जन्मदिन पर “स्वच्छता अभियान“ की शुरुआत की. यह अभियान अपनी लक्ष्य की पूर्ति करेगा या नहीं समय ही बताएगा.

स्वच्छ भारत अभियान एक बहुत बड़ा कार्यक्रम है जिसमें पूरे देश की जनता की सहभागिता से एक “स्वच्छ भारत” निर्माण की कल्पना करते है. इस सन्दर्भ में अभियान का “SWOT” विश्लेषण करके उसके भविष्य की गतिविधियों को उजागर करने की कोशिश करना चाहता हूं.

यहां मैं स्वच्छता अभियान का विश्लेषण “SWOT” के आधार पर प्रस्तुत करना चाहता हूं

क्या है “SWOT”

Strength	-	शक्ति
Weakness	-	कमज़ोरी
Oppourtunity	-	मौका
Threat	-	आशंका

शक्ति एवं कमजोरी आंतरिक है और वर्तमान से जुड़ी हैं तो मौका एवं आशंका बाहरी व्यवस्थावों से जुड़े हैं और भविष्य को सूचित करते हैं.

<u>स्वच्छता अभियान की शक्ति</u>

भारत सरकार द्वारा चलाने वाला अभियान है. इसकी शुरुआत श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ महान व्यक्तियों को चुनौती देकर शुरू किया गया था. इस अभियान का उद्देश्य अगले पांच वर्षों में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू जी की 150 वीं जयन्ती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके.

सरकारी कार्यालयों एवं स्कूलों में अभियान की शुरुआत से अनेक लोगों की सहभागिता एवं स्वच्छता के प्रति अवबोध जगाने की कोशिश की.

स्वच्छता के साथ साथ स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण की प्रधानता दिया जाता है. स्कूलों और दफ्तरों में पेड़ पौधे लगाकर देश की जनता ने अभियान को और आगे बढाया.

<u>स्वच्छता अभियान की कमज़ोरियां</u>

सक्षम कार्यान्वयन की असफलता - शुरुआत अच्छी थी लेकिन उसका कार्यान्वयन असफल रहा. “Times of India” में पिछले दिन आए समाचार में एक आनलाइन सर्वेक्षण के अनुसार 70% से ज्यादा लोग स्वच्छता अभियान की सक्षम कार्यान्वयन पर प्रश्न चिह्न डाला है.

कोई भी योजना हो, उसे सफल बनाने के लिए पर्याप्त निधि की आवश्यकता ज़रूरी है. बदलती सरकार निधि का सदुपयोग नहीं दुरुपयोग करने में सक्षम रही. चंडीगढ़ में बाबा परमाणु अनुसंधान केंद्र की सहभागिता से खाद्य अवशिष्ट और बागवानी के कचरे को मीथेन गैस में बदला जाएगा जिसका उपयोग बिजली बनाने में किया जा सके. पर्याप्त निधि की कमी से पूरे देश में इसको लागू करना मुश्किल है.

सूचना, शिक्षा एवं संचार की कमी (lack of information, education and communication) - अभियान का लक्ष्य आम जनता तक पहुंचाना मुश्किल है. एक सर्वेक्षण के अनुसार निर्मल भारत अभियान की असफलता का मुख्य कारण IEC की कमी थी. 15% निधि का सिर्फ 4% सूचना, शिक्षा, एवं संचार के

लिए विनियोग किया गया. नतीजा क्या हुआ? गावों के लोगों तक अभियान का मुख्य लक्ष्य पहुंचाने में सरकार असफल रहा.

अभियान हो या कोई भी पॉलिसी हो हर एक पार्टी अपने फायदे या वोट पाने के लिए इसका दुरुपयोग करते है. राजनैतिक धक्कल अंदाजी के कारण कई अभियान या पॉलिसी लक्ष्य पूर्ति करने में असफल रहे.

<u>स्वच्छता अभियान की आशंका</u>

स्वच्छता अभियान के सम्बन्ध में प्रश्न यही उठता है कि भारत जैसे विकासशील राष्ट्र सिर्फ स्वच्छता को ही प्राथमिकता देना चाहिए? गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी से जूझे देश के लिए समस्याओं की कमी नहीं है.

जनता अपने घर की सफाई करती हैं और कूडा बाहर फेंकती हैं. कब तक जनता अभियान को आगे चलाएगी? सवाल की बात है. चेतन भगत ने जो कहा था याद में आता है - “We don’t consider “Mohalla” our property“ (मोहल्ला को हम अपनी संपत्ति नहीं मानते है).

यांत्रिक संविधानो की कमी एवं उचित प्रोत्साहन योजानाओं की कमी - चंडीगढ़ में 3600 सफाई कर्मियों की फौज 370 मेट्रिक टन मुनिसिपल सॉलिड वेस्ट की सफाई करती है. वे इतनी दक्षता से इसलिए काम कर पाते हैं, क्योंकि उनके पास उच्चगतिवाले डंपर, प्लेसर, यांत्रिक स्वीपिंग इकाईया और श्रब बस्टर जैसे आधुनिक यंत्र है. सफाई कर्मियों को उचित प्रोत्साहन योजनाएँ देना बहुत ज़रूरी है.

<u>स्वच्छता अभियान के मौकाएँ</u>

स्वच्छ भारत में अधिक विदेशी पर्यटक आएंगे जिससे देश की आर्थिक, सांस्कृतिक विकास होगी.
स्वच्छ भारत में पर्यावरण संरक्षण की प्रधानता है. पूरे विश्व के लिए यह कल्याणकारी सिद्ध होगा.
पर्यावरण संरक्षण के साथ साथ स्वास्थ्य की प्रधानता है और एक स्वस्थ जनता को रूपायित करेगा. स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है. अतः हर व्यक्ति को जीवन में स्वच्छता अपनानी चाहिए और अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए.
इस लेख में अभियान की शक्ति, कमजोरी, मौका, एवं आशंका को विश्लेषित करने की कोशिश की गयी है. जो भी हो, कोई भी सरकार चाहे जितनी भी योजनायं शुरू करें, उसको सफल बनाने के लिए जनता की सहभागिता बहुत ज़रूरी है. जैसा आप जानते हैं “स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है”. यह कदम हर एक व्यक्ति को उठाना चाहिए ताकि पूरे देश की आर्थिक, सांस्कृतिक, एवं सामाजिक दृष्टि से विकास हो सके. दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ विविधता में एकता की विशेषता रखनेवाले भारत देश को स्वच्छ भारत की ओर ले जाना हम सब का कर्तव्य है. हम इसके लिए ज़रूर कोशिश करेंगे.

जय हिन्द जय हिन्दी

****